सं श्रो वि/जी जी एन /32-84/15883.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मैंडीटैक्स फार्मा प्रा. लि. महरोली रोड़ बी-32 इण्डस्ट्रीयल इस्टेंट, गुड़गांवा, के श्रमिक श्री सतीश कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भ्रोर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाछनीय समझते हैं ;

इस लिए, प्रब, ग्रीशोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 9641-1-श्रम 70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं 3864-ए.एस.ग्रो (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सतीश कुमार की सेवाश्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 30 अप्रैल, 1984

सं. ग्री.वि./एफ.डी./44-84/16717. —चूंकि हरियाणा के राज्यपान की राय है कि में शालीमार स्टील, 12/1, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री मिश्री पंडित तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनण्य हेत् निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते है ;

इसलिए, भव, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रविसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रविसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रविनियम की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य के लिए निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री मिश्री पंडित की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री विव /एफ.डी. /45-84/16724. - चूं कि हरियाणा के राज्यपाल, की राय है कि में. के. श्री मैटल इण्डस्ट्रीज, गोपी कालोनी, फरीदाबाद के श्रीमक श्री गुणानन्द झा तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविनयम, 1947 की, घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिविस्चना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिविस्चना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिविनयम की घारा 7 के श्रदीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिणंय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है:--

क्या श्री गुणानन्द झा की सेवाझों का समापत त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस ाराहत का इकदार है ?

सं० भ्रो.वि /एफ.डी. /41-84/16731.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० इण्डियन इंडीकेशन कास्टिंग प्रा० लि०, फ़रीदाबाद, के श्रमिक श्री राम बरन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें ईसके बाद लिखित मामले में कोई भ्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णये हेतुं निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

483

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टितयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुमे हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिष्टिस्चना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, श्रिष्टिस्चना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्टितयम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मानला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम वरन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. औ.वि /एफ.डो. /41-84/16738.—-चूंिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि इण्डियन इंडीकेशन कार्सिटग प्रा. लि. फरीदावाद के श्रिमिक श्री राज किशोर चौधरी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई गैद्योगिक विवाद है ;

भ्रौर चूंकि हरियाण। के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद भ्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495—जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीद वाद, भो विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नी वे लिखा मामला नमायनिर्णय हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री राज किशौर चोधरीकी सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./48-84/16745.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज सारको इण्डस्ट्रीज प्रा० लि० मथुरा रोड़, फरीदावाद, के श्रमिक श्री सुभाष चन्द्र तथा उसके प्रबन्धकों के बीव इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उर्धारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्ति हों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यनाल इसके हारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रश्वन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है: ...

क्या श्री सुभाय चन्द्र की सेवाम्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. झो.वि./एफ.डी./34-84/16752.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० टैलर इन्स्ट्र्मैंट कम्पनी लि०, 14 मथुरा रोड़, फरीदाबाद,के श्रमिक श्री श्यामल बैनर्जी तथा असे प्रत्मनों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई झौद्योगिक विवाद है;

भीर चू कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणं य हेतु निविष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री श्यामल वैनर्जी की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. झो.वि./एफ.डी./47-84/16703.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० गुरूकुल इन्जिनियर्ज 32 लिंक रोड़, फरीदाबाद के श्रमिक श्री धर्मपाल शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई खीदोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, मब, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधित्वना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री धर्मपाल शर्मा की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रौ वि./एफ बी ०/38-84/16710. — चूं कि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं० रीता इन्डस्ट्रीज लिंक रोड़ फरीदाबाद, के श्रीमक श्री सूबा सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीचोणिक विवाद है:

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना षांछमीय समझते हैं;

इसिलिए, प्रबं, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रिधित्यम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, करीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनगंय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवत्वकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रमवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सूबा सिंह की सेवाफ्रों का समापन न्यायोजित सथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 25 अप्रैल, 1984

सं भो.वि./एफ.डी./11-84/16087.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. फरीदावाद सैन्ट्रल को रिटिव बैंक लि० फरीदाबाद के श्रमिक श्री करण सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए श्रधिसूचना सं. 11495—ज़ी—श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामना न्यायिनिर्मन के लिए निर्देश्ट करते हैं जो कि उत्त प्रतान की तथा प्रतिक के बोच या तो विवादग्रस्त मामना है या विवाद से सुसंगत मथना सम्बन्धित मामना है:—

क्या श्री करने सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?
एस० के० महेण्यरी,
संयुक्त सिंब न, हरियाणा सरकार,
श्रम विभाग।